ईसाइयों के त्योहारों में भाग लेने का हुक्म

[हिन्दी – Hindi – هندي]

शैख अब्दुल अज़ीज़ बिन बाज़

अनुवाद : अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह

2012 - 1433

IslamHouse.com

حكم مشاركة النصارى في أعيادهم

« باللغة الهندية »

سماحة الشيخ عبد العزيز بن باز

ترجمة : عطاء الرحمن ضياء الله

2012 - 1433

IslamHouse.com

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मैं अति मेहरबान और दयालु अल्लाह के नाम से आरम्भ करता हूँ।

إن الحمد لله نحمده ونستعينه ونستغفره، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا، وسيئات أعمالنا، من يهده الله فلا مضل له، ومن يضلل فلا هادي له، وبعد:

हर प्रकार की हम्द व सना (प्रशंसा और गुणगान) केवल अल्लाह के लिए योग्य है, हम उसी की प्रशंसा करते हैं, उसी से मदद मांगते और उसी से क्षमा याचना करते हैं, तथा हम अपने नफ्स की बुराई और अपने बुरे कामों से अल्लाह की पनाह में आते हैं, जिसे अल्लाह तआला हिदायत प्रदान करदे उसे कोई पथभ्रष्ट (गुमराह) करने वाला नहीं, और जिसे गुमराह कर दे उसे कोई हिदायत देने वाला नहीं। हम्द व सना के बाद :

ईसाइयों के त्योहारों में भाग लेना

प्रश्न :

कुछ मुसलमान लोग ईसाइयों के त्योहारों में भाग लेते हैं, तो इस बारे में आपकी क्या सलाह व निर्देश है ?

उत्तर :

मुसलमान पुरूष व महिला के लिए ईसाइयों, या यहूदियों, या उनके अलावा अन्य काफिरों के त्योहारों में भाग लेना जायज़ नहीं है, बल्कि उसे छोड़ देना अनिवार्य है ; क्योंकि जिसने किसी क़ौम की समानता और छवि अपनाई वह उसे में से है, जबकि अल्लाह के पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमें उनकी समानता अपनाने और उनकी नैतिकता की नकल करने से सावधान किया है।

अतः विश्वासी पुरूष व महिला को इससे सावधान रहना चाहिए, और उनके लिए इस बारे में किसी भी चीज़ के द्वारा मदद करने की अनुमति नहीं है, क्योंकि ये शरीअत के विरूध त्योहार हैं।

इसलिए उन (त्योहारों एवं समारोहों) में शामिल होना, उन्हें आयोजित करनेवालों के साथ सहयोग करना, या किसी भी चीज़ – चाय, या कॉफी, या इसके अलावा किसी अन्य चीज़ जैसे बरतन वगैरह के द्वारा उनकी मदद करना जायज़ नहीं है, तथा इसलिए भी कि अल्लाह तआला का फरमान है :

﴿ وَتَعَاوَنُوا عَلَى الْبِرِّ وَالتَّقْوَى وَلَا تَعَاوَنُوا عَلَى الْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ﴾ [سورة المائدة : ٢]

''और तुम नेकी और परहेज़गारी (पुण्य और धर्मपरायणता) के कामों में एक दूसरे का सहयोग किया करो, तथा पाप और आक्रामकता के कामों में एक दूसरे का सहयोग न करो, और अल्लाह से डरते रहो, निःसंदेह अल्लाह तआला कठोर सज़ा देनेवाला है।'' (सूरतुल मायदा : 2)

अतः काफिरों के त्योहारों में भाग लेना एक प्रकार का पाप और आक्रामकता पर सहयोग करना है।

प्रश्न :

जन्मदिन के उत्सव व समारोह आयोजित करने का क्या हुक्म है ?

उत्तर :

जन्मदिन के उत्सव मनाने का पवित्र शरीअत में कोई आधार नहीं है बल्कि वह एक बिद्अत (नवाचार) है ; क्योंकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फरमान है :

''जिसने हमारी इस शरीअत में कोई ऐसी चीज़ ईजाद की जिस का उस से कोई संबंध नही है तो वह मर्दूद (अस्वीकृत) है।'' {बुखारी व मुस्लिम}

और मुस्लिम की एक रिवायत में है कि : ''जिसने कोई ऐसा काम किया जो हमारी शरीअत के अनुसार नहीं है तो वह मर्दूद (अस्वीकृत) है।''

और यह बात सर्वज्ञात है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने जीवनकाल में अपने जन्मदिन का उत्सव नहीं मनाया, न आप ने इसका हुक्म दिया, न आप ने अपने सहाबा को इसकी शिक्षा दी। इसी तरह आपके खुलफा–ए–राशिदीन (अर्थात सत्यमार्ग पर स्थापित उत्तराधिकारी), और अन्य सभी सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने भी ऐसा नहीं किया, जबकि वे लोग आपकी सुन्नत का सबसे अधिक ज्ञान रखनेवाले थे, तथा वे लोगों में सबसे अधिक अल्लाह के पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मोहब्बत करनेवाले और आपकी लाई हुई बातों की पैरवी करने के सबसे अधिक अभिलाषी और लालसी थे। अतः यदि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जन्मदिन का उत्सव मनाना धर्मसंगत और नेकी का काम होता तो वे उसकी ओर अवश्य पहल करते। इसी तरह प्रतिष्ठित शताब्दियों में विद्वानों में से भी किसी ने ऐसा नहीं किया है और न ही उसका आदेश दिया है।

तो इससे पता चला कि इस काम का उस शरीअत से कोई संबंध नहीं जिसके साथ अल्लाह तआला ने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भेजा है, और हम अल्लाह सर्वशक्तिमान और सभी मुसलमानों को इस बात पर गवाह (साक्षी) बनाते हैं कि यदि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ऐसा किया होता या इसका आदेश दिया होता या आपके

सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने ऐसा किया होता तो हम उसकी ओर अवश्य पहल करते और उसकी ओर दूसरो को आमंत्रित करते। क्योंकि, अल्लाह का शुक्र है कि हम लोग आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत की पैरवी और आपके आदेश व निषेध का सम्मान करने के सबसे अधिक अभिलाषी व लालसी हैं। हम अल्लाह से अपने लिए और अपने सभी मुसलमान भाइयों के लिए सत्य पर सुदृढ़ता व स्थिरता और अल्लाह की पवित्र शरीअत के विपरीत सभी चीज़ों से सुरक्षा का प्रश्न करते हैं, निःसंदेह वह सबसे अधिक उदार और सबसे बड़ा दानशील है।

मजल्लतुल बुहूसिल इस्लामिया (इस्लामी अनुसंधान पत्रिका) अंक : 15, पृष्ठः 285

स्रोत : शैख अब्दुल अज़ीज़ बिन बाज़ साइट